

बालकों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षा की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. सीमा

असिस्टेंट प्रोफेसर

शारदा कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड टेक्नोलॉजी

Email: aggarwalseema091@gmail.com

1. सारांश

व्यक्तित्व विकास मानव जीवन की एक सतत, गतिशील और बहुआयामी प्रक्रिया है, जो जन्म से प्रारंभ होकर जीवन के विभिन्न चरणों में निरंतर विकसित होती रहती है। बाल्यावस्था व्यक्तित्व निर्माण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि इसी अवस्था में बालक की आदतें, रुचियाँ, दृष्टिकोण, मूल्य, आत्मविश्वास, सामाजिक व्यवहार और भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ आकार ग्रहण करने लगती हैं। बालक के व्यक्तित्व पर परिवार, समाज, संस्कृति, आर्थिक परिस्थितियों और परिवेश का प्रभाव पड़ता है, किंतु इन सभी के बीच शिक्षा की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। शिक्षा बालक को केवल विषयगत ज्ञान प्रदान नहीं करती, बल्कि उसके बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक एवं सृजनात्मक विकास के लिए अनुकूल अवसर भी उपलब्ध कराती है।

विद्यालय बालक के लिए परिवार के बाद सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है। विद्यालय में शिक्षक का व्यवहार, सहपाठियों के साथ संपर्क, अनुशासन, शिक्षण पद्धति, खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियाँ तथा लोकतांत्रिक वातावरण उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। एक संवेदनशील एवं प्रशिक्षित शिक्षक बालक में आत्मविश्वास, स्वतंत्र चिंतन, सृजनात्मकता, अनुशासन, सहानुभूति, नेतृत्व तथा जिम्मेदारी जैसे गुणों को विकसित कर सकता है। इसी प्रकार सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ बालकों की छिपी हुई प्रतिभाओं को पहचानने और उन्हें अभिव्यक्ति प्रदान करने में सहायक होती हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी शिक्षा को केवल संज्ञानात्मक ज्ञान तक सीमित न रखकर विद्यार्थियों के समग्र विकास, आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता, जीवन-कौशल, नैतिकता एवं संवैधानिक मूल्यों के विकास से जोड़ने पर बल दिया गया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में बाल व्यक्तित्व की अवधारणा, व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों, शिक्षा, शिक्षक, विद्यालय, परिवार एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष सामने आता है कि यदि शिक्षा को परीक्षा एवं अंक-केंद्रित व्यवस्था से आगे बढ़ाकर बाल-केंद्रित, अनुभवात्मक एवं मूल्यपरक बनाया जाए तो यह संतुलित, आत्मविश्वासी, संवेदनशील और उत्तरदायी व्यक्तित्व के निर्माण में प्रभावी भूमिका निभा सकती है।

मुख्य शब्द: बालक, व्यक्तित्व विकास, शिक्षा, विद्यालय, शिक्षक, नैतिक विकास, सामाजिक विकास, जीवन-कौशल, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, समग्र विकास।

2. भूमिका

बालक किसी भी समाज और राष्ट्र की सबसे महत्वपूर्ण मानवीय संपदा होता है। वर्तमान का बालक भविष्य का नागरिक, वैज्ञानिक, शिक्षक, चिकित्सक, प्रशासक, कलाकार, उद्यमी और नेतृत्वकर्ता बनता है। अतः किसी राष्ट्र का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि वह अपने बालकों के पालन-पोषण, शिक्षा और व्यक्तित्व विकास के लिए किस प्रकार का वातावरण उपलब्ध कराता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल पढ़ना-लिखना सिखाना अथवा परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कराना नहीं होना चाहिए, बल्कि बालक की अंतर्निहित क्षमताओं का विकास करके उसे एक संतुलित, विवेकशील, आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से उत्तरदायी व्यक्ति बनाना भी होना चाहिए। बालक का विकास अनेक पक्षों में होता है। उसकी शारीरिक वृद्धि के साथ-साथ उसकी बुद्धि, भाषा, कल्पना, भावना, सामाजिकता, नैतिकता और आत्म-अवधारणा का भी विकास होता है। इन

सभी पक्षों का संतुलित विकास ही एक स्वस्थ व्यक्तित्व का आधार बनता है। यदि किसी बालक का केवल बौद्धिक विकास किया जाए लेकिन उसमें भावनात्मक संतुलन, सामाजिक संवेदनशीलता, आत्मविश्वास या नैतिक दृष्टिकोण का विकास न हो तो उसे पूर्ण व्यक्तित्व विकास नहीं कहा जा सकता।

शिक्षा इस संपूर्ण प्रक्रिया को व्यवस्थित और उद्देश्यपूर्ण दिशा प्रदान करती है। विद्यालय में बालक विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों से संपर्क करता है वह शिक्षक के मार्गदर्शन में ज्ञान प्राप्त करता है, सहपाठियों से सहयोग करना सीखता है, प्रतियोगिताओं में भाग लेकर आत्मविश्वास विकसित करता है तथा अनुशासन और जिम्मेदारी का अनुभव करता है। विद्यालय सामाजिक जीवन का एक लघु रूप है, जहाँ बालक भविष्य के सामाजिक जीवन के लिए तैयारी करता है।

आज शिक्षा की भूमिका और अधिक व्यापक हो गई है। डिजिटल तकनीक, वैश्वीकरण, सामाजिक परिवर्तन, प्रतिस्पर्धा और बदलती जीवनशैली ने बालकों के सामने नए अवसरों के साथ अनेक चुनौतियाँ भी प्रस्तुत की हैं। ऐसे में शिक्षा का दायित्व है कि वह बालक को केवल जानकारी न दे, बल्कि उसे सोचने, निर्णय लेने, समस्याओं का समाधान करने, दूसरों के विचारों का सम्मान करने और विपरीत परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता भी प्रदान करे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी विद्यार्थियों के समग्र एवं बहुआयामी विकास पर जोर देते हुए ज्ञान के साथ कौशल, मूल्य, सृजनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन तथा सामाजिक-भावनात्मक विकास की आवश्यकता स्वीकार की गई है। इसलिए बाल व्यक्तित्व निर्माण के संदर्भ में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन वर्तमान समय में विशेष महत्व रखता है।

3. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. बाल व्यक्तित्व की अवधारणा एवं उसके प्रमुख आयामों को स्पष्ट करना।
2. बालकों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना।
3. बाल व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षक के योगदान का विश्लेषण करना।
4. विद्यालयी वातावरण के बालक के व्यवहार एवं व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
5. सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों की व्यक्तित्व विकास में भूमिका को स्पष्ट करना।
6. परिवार एवं विद्यालय के पारस्परिक सहयोग के महत्व का विश्लेषण करना।
7. बालकों में आत्मविश्वास, नेतृत्व, नैतिकता एवं जीवन-कौशल के विकास में शिक्षा के योगदान को समझना।
8. बालकों के संतुलित एवं सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

4. शोध-पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। शोध में प्राथमिक सर्वेक्षण या प्रयोगात्मक विधि के स्थान पर द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। शिक्षा, बाल मनोविज्ञान, व्यक्तित्व विकास, राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा शैक्षिक दर्शन से संबंधित पुस्तकों, शोध आलेखों, सरकारी नीतिगत दस्तावेजों एवं शैक्षिक संस्थाओं द्वारा प्रकाशित सामग्री का अध्ययन किया गया है। उपलब्ध साहित्य का विषयानुसार वर्गीकरण कर शिक्षा, परिवार, विद्यालय, शिक्षक और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का बाल व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव विश्लेषित किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य किसी एक विशेष आयु समूह अथवा भौगोलिक क्षेत्र का सांख्यिकीय परीक्षण करना नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास में शिक्षा की व्यापक भूमिका को सैद्धांतिक और शैक्षिक दृष्टिकोण से स्पष्ट करना है।

5. बाल व्यक्तित्व का अर्थ एवं अवधारणा

व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी के “Personality” का हिंदी रूप है। सामान्य अर्थ में व्यक्तित्व से आशय व्यक्ति के उन विशिष्ट गुणों, व्यवहारों, विचारों, भावनाओं, रुचियों, क्षमताओं एवं आदतों से है जो उसे अन्य लोगों से अलग पहचान प्रदान करते हैं।

मनोवैज्ञानिक गॉर्डन ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व को व्यक्ति में उपस्थित मनो-शारीरिक तंत्रों के गतिशील संगठन के रूप में समझाया है, जो उसके विशिष्ट व्यवहार और विचारों को निर्धारित करता है। यह परिभाषा स्पष्ट करती है कि व्यक्तित्व स्थिर नहीं होता। व्यक्ति के अनुभव, शिक्षा और वातावरण के साथ इसमें परिवर्तन और परिष्कार होता रहता है।

बालक जन्म के समय पूर्ण विकसित व्यक्तित्व लेकर नहीं आता। उसमें कुछ जैविक और आनुवंशिक प्रवृत्तियाँ अवश्य होती हैं, लेकिन वातावरण और अनुभव उन्हें दिशा देते हैं। परिवार का व्यवहार, माता-पिता का स्नेह, अनुशासन, सामाजिक वातावरण और विद्यालयी अनुभव बालक के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

बाल व्यक्तित्व को समझने के लिए उसके विभिन्न पक्षों पर विचार करना आवश्यक है।

(क) शारीरिक पक्ष

शारीरिक स्वास्थ्य, शरीर की संरचना, सक्रियता, स्वच्छता, कार्यक्षमता तथा शरीर के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। स्वस्थ बालक सामान्यतः सीखने, खेलने और सामाजिक गतिविधियों में अधिक सक्रिय भाग ले सकता है। शिक्षा के माध्यम से खेलकूद, योग, व्यायाम और स्वास्थ्य संबंधी आदतों का विकास किया जा सकता है।

(ख) बौद्धिक एवं मानसिक पक्ष

बुद्धि, स्मृति, कल्पना, चिंतन, तर्क, समस्या समाधान और निर्णय क्षमता व्यक्तित्व के बौद्धिक पक्ष का निर्माण करती हैं। शिक्षा इन क्षमताओं को विकसित करने का प्रमुख माध्यम है। प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता तथा खोजपूर्ण शिक्षण बालक को सक्रिय चिंतक बनाते हैं।

(ग) भावनात्मक पक्ष

प्रसन्नता, भय, क्रोध, प्रेम, ईर्ष्या, निराशा और उत्साह जैसी भावनाएँ बालक के व्यवहार को प्रभावित करती हैं। भावनात्मक रूप से संतुलित बालक अपनी भावनाओं को पहचानना, उचित रूप से अभिव्यक्त करना और नियंत्रित करना सीखता है।

(घ) सामाजिक पक्ष

सहयोग, सहानुभूति, मित्रता, नेतृत्व, सामाजिक समायोजन और दूसरों के प्रति सम्मान सामाजिक व्यक्तित्व के प्रमुख संकेत हैं। विद्यालय समूह जीवन का अनुभव प्रदान कर इन गुणों को विकसित करता है।

(ङ) नैतिक पक्ष

सत्य, ईमानदारी, न्याय, कर्तव्यपरायणता, अनुशासन, उत्तरदायित्व और मानवीय संवेदना बालक के नैतिक व्यक्तित्व के आधार हैं। ये गुण केवल उपदेश से नहीं बल्कि व्यवहार, वातावरण और उदाहरण के माध्यम से अधिक प्रभावी रूप से विकसित होते हैं।

6. व्यक्तित्व विकास में शिक्षा की भूमिका

6.1 बौद्धिक विकास

शिक्षा बालक को ज्ञान प्रदान करने के साथ उसकी सोचने और समझने की क्षमता विकसित करती है। जब शिक्षक बालक को प्रश्न पूछने, प्रयोग करने, तुलना करने और निष्कर्ष निकालने के अवसर देता है तो उसका बौद्धिक विकास होता है।

रटने पर आधारित शिक्षा के बजाय सक्रिय और अनुभवात्मक अधिगम बालक में तर्क, विश्लेषण तथा समस्या समाधान क्षमता विकसित करता है। बालक जब किसी समस्या के कई संभावित समाधान खोजने का प्रयास करता है तो उसमें स्वतंत्र चिंतन का विकास होता है।

6.2 नैतिक एवं चारित्रिक विकास

शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य अच्छे चरित्र का निर्माण भी है। समाज को केवल ज्ञानवान व्यक्तियों की ही नहीं, बल्कि ईमानदार, संवेदनशील और उत्तरदायी नागरिकों की आवश्यकता होती है।

विद्यालयी जीवन में समयपालन, नियमों का सम्मान, सामूहिक जिम्मेदारी, दूसरों की सहायता, सत्यवादिता और निष्पक्षता जैसे व्यवहार नैतिक विकास में योगदान करते हैं। शिक्षक स्वयं यदि आदर्श व्यवहार प्रस्तुत करता है तो उसका प्रभाव बालकों पर अधिक गहरा पड़ता है।

6.3 सामाजिक विकास

विद्यालय वह स्थान है जहाँ बालक परिवार की सीमाओं से बाहर निकलकर व्यापक सामाजिक संसार से परिचित होता है। विभिन्न सामाजिक, भाषाई और आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के साथ अध्ययन करने से उसमें विविधता के प्रति सम्मान विकसित होता है।

समूह कार्य, खेल, सामूहिक परियोजनाएँ, विद्यालय उत्सव और छात्र परिषद जैसी गतिविधियाँ सहयोग, समायोजन और जिम्मेदारी सिखाती हैं। इससे बालक लोकतांत्रिक व्यवहार और सामाजिक उत्तरदायित्व को व्यावहारिक रूप से समझता है।

6.4 भावनात्मक विकास

भावनात्मक संतुलन स्वस्थ व्यक्तित्व का आवश्यक आधार है। प्रत्येक बालक कभी न कभी असफलता, निराशा, भय, प्रतिस्पर्धा और तनाव का अनुभव करता है। यदि उसे सहायक विद्यालयी वातावरण मिलता है तो वह इन भावनाओं का स्वस्थ ढंग से सामना करना सीख सकता है।

शिक्षक को बालक की गलतियों पर अपमानजनक प्रतिक्रिया देने के बजाय उसे समझाने और सुधारने का अवसर देना चाहिए। इससे बालक में आत्मसम्मान बना रहता है और वह असफलता को सीखने के अवसर के रूप में स्वीकार करता है।

6.5 आत्मविश्वास का विकास

व्यक्तित्व की सफलता में आत्मविश्वास की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जब बालक अपने विचार व्यक्त करता है, प्रश्नों का उत्तर देता है, किसी परियोजना को पूरा करता है अथवा प्रतियोगिता में भाग लेता है, तब उसमें उपलब्धि की अनुभूति उत्पन्न होती है।

शिक्षक द्वारा उचित प्रशंसा और रचनात्मक प्रतिक्रिया बालक के आत्मविश्वास को मजबूत करती है। इसके विपरीत लगातार आलोचना, तुलना और उपहास उसके आत्मसम्मान को कमजोर कर सकते हैं।

6.6 नेतृत्व क्षमता का विकास

नेतृत्व का अर्थ केवल दूसरों को निर्देश देना नहीं, बल्कि जिम्मेदारी स्वीकार करना, निर्णय लेना, सहयोग करना और समूह को लक्ष्य की ओर ले जाना है।

विद्यालय में कक्षा प्रतिनिधित्व, छात्र परिषद, खेल दल, सांस्कृतिक आयोजन और सामुदायिक कार्यक्रम बालकों को नेतृत्व का अभ्यास करने के अवसर प्रदान करते हैं। इससे उनमें जिम्मेदारी और निर्णय क्षमता का विकास होता है।

6.7 रचनात्मकता का विकास

हर बालक में किसी न किसी प्रकार की सृजनात्मक क्षमता होती है। शिक्षा का कार्य उस क्षमता की पहचान कर उसे विकसित करना है।

चित्रकला, कहानी लेखन, संगीत, हस्तकला, नाटक, विज्ञान मॉडल, गणितीय गतिविधियाँ और नवाचार आधारित परियोजनाएँ बालक की कल्पनाशक्ति को प्रोत्साहित करती हैं। ऐसा वातावरण जहाँ केवल एक सही उत्तर पर जोर न देकर नए विचारों का स्वागत किया जाता है, रचनात्मक व्यक्तित्व के विकास में सहायक होता है।

6.8 संचार कौशल का विकास

स्पष्ट और प्रभावी संचार व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण गुण है। विद्यालय में भाषा शिक्षण, भाषण, वाद-विवाद, कहानी सुनाना, प्रस्तुतीकरण और समूह चर्चा बालक को अपने विचारों को व्यवस्थित ढंग से व्यक्त करने की क्षमता प्रदान करते हैं।

साथ ही बालक दूसरों की बात सुनना और असहमति होने पर भी सम्मानपूर्वक प्रतिक्रिया देना सीखता है।

6.9 जीवन-कौशल का विकास

आधुनिक जीवन में केवल विषय ज्ञान पर्याप्त नहीं है। व्यक्ति में निर्णय लेने, समस्या समाधान, समय प्रबंधन, संचार, आत्म-प्रबंधन, सहयोग और तनाव से निपटने की क्षमताएँ भी होनी चाहिए।

शिक्षा जब वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जुड़ती है तो बालक में इन कौशलों का स्वाभाविक विकास होता है। जीवन-कौशल आधारित शिक्षा बालक को भविष्य की सामाजिक एवं व्यावसायिक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करती है।

7. शिक्षक की भूमिका

शिक्षक बालक के व्यक्तित्व निर्माण का अत्यंत महत्वपूर्ण कारक है। कई बार शिक्षक का व्यवहार और उसकी कही हुई छोटी-सी बात भी बालक के मन पर लंबे समय तक प्रभाव छोड़ सकती है।

एक प्रभावी शिक्षक निम्नलिखित भूमिकाएँ निभाता है—

आदर्श प्रस्तुत करना: बालक शिक्षक के व्यवहार का अनुकरण करता है। समयपालन, निष्पक्षता, संवेदनशीलता और ईमानदारी जैसे गुण शिक्षक के व्यवहार में दिखाई देने चाहिए।

प्रेरणा प्रदान करना: शिक्षक बालक की छोटी उपलब्धियों को पहचानकर उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा दे सकता है।

व्यक्तिगत भिन्नताओं को स्वीकार करना: सभी बच्चों की बुद्धि, रुचि, गति और प्रतिभा समान नहीं होती। अच्छा शिक्षक विद्यार्थियों की तुलना करने के बजाय उनकी व्यक्तिगत क्षमता को पहचानता है।

सकारात्मक वातावरण प्रदान करना: भय और दंड आधारित शिक्षण से स्वस्थ व्यक्तित्व विकसित नहीं होता। शिक्षक को ऐसा वातावरण बनाना चाहिए जहाँ बालक बिना भय के प्रश्न पूछ सके।

प्रतिभा की पहचान: कुछ बच्चे खेल, कला, संगीत, लेखन, गणित या नेतृत्व में विशेष रुचि रखते हैं। शिक्षक उनकी क्षमताओं को पहचानकर उचित अवसर प्रदान कर सकता है।

भावनात्मक सहयोग: कई बार बालक विद्यालय में ऐसी समस्याओं से गुजरता है जिन्हें वह परिवार से साझा नहीं कर पाता। संवेदनशील शिक्षक उसका मार्गदर्शन कर सकता है।

इस प्रकार शिक्षक केवल ज्ञान देने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, परामर्शदाता और व्यक्तित्व निर्माता भी है।

8. विद्यालयी वातावरण की भूमिका

विद्यालय को बालक का दूसरा घर कहा जाता है। बालक अपने दिन का महत्वपूर्ण समय विद्यालय में व्यतीत करता है। इसलिए विद्यालय का भौतिक, सामाजिक और भावनात्मक वातावरण उसके व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डालता है।

स्वच्छ एवं सुरक्षित परिसर, पर्याप्त प्रकाश और वायु, खेल का मैदान, पुस्तकालय, प्रयोगशाला तथा रचनात्मक गतिविधियों की सुविधाएँ सकारात्मक अधिगम वातावरण तैयार करती हैं।

विद्यालय में शिक्षक और विद्यार्थी के बीच सम्मानपूर्ण संबंध होना चाहिए। अनुशासन आवश्यक है, लेकिन अनुशासन का आधार भय के बजाय आत्मनियंत्रण और जिम्मेदारी होना चाहिए।

लोकतांत्रिक वातावरण भी महत्वपूर्ण है। विद्यार्थियों को अपने विचार व्यक्त करने और विद्यालय की कुछ गतिविधियों में निर्णय प्रक्रिया में भाग लेने के अवसर मिलने चाहिए। इससे उनमें लोकतांत्रिक मूल्य, नेतृत्व और उत्तरदायित्व का विकास होता है।

विद्यालय में भेदभाव, अपमान, अत्यधिक प्रतिस्पर्धा अथवा पक्षपात बालक के व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। इसलिए समावेशी और समानतापूर्ण विद्यालयी संस्कृति स्वस्थ व्यक्तित्व निर्माण के लिए आवश्यक है।

9. सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का महत्व

सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ शिक्षा का पूरक भाग हैं। ये गतिविधियाँ बालक को कक्षा से बाहर सीखने और अपनी क्षमताओं को अभिव्यक्त करने का अवसर देती हैं।

खेलकूद से शारीरिक स्वास्थ्य, अनुशासन, टीम भावना और नेतृत्व विकसित होता है। वाद-विवाद और भाषण से अभिव्यक्ति तथा आत्मविश्वास बढ़ता है। नाटक से संचार और अभिनय क्षमता विकसित होती है। संगीत एवं नृत्य भावनात्मक अभिव्यक्ति और सौंदर्यबोध को बढ़ाते हैं। चित्रकला और हस्तकला रचनात्मकता को प्रोत्साहित करती हैं।

योग एवं ध्यान बालक में एकाग्रता, आत्मनियंत्रण और मानसिक शांति विकसित करने में सहायक हो सकते हैं। स्काउट-गाइड, राष्ट्रीय सेवा संबंधी गतिविधियाँ और सामाजिक सेवा कार्यक्रमों से सेवा भावना, सहयोग और सामाजिक उत्तरदायित्व विकसित होता है।

इन गतिविधियों का विशेष महत्व उन विद्यार्थियों के लिए भी है जो पारंपरिक परीक्षा प्रणाली में उत्कृष्ट प्रदर्शन नहीं कर पाते, किंतु अन्य क्षेत्रों में प्रतिभाशाली होते हैं। सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ ऐसे बालकों को सफलता और पहचान का अवसर देती हैं।

10. व्यक्तित्व विकास में परिवार की भूमिका

परिवार बालक की प्रथम और सबसे महत्वपूर्ण पाठशाला है। बालक भाषा, व्यवहार, सामाजिक संबंध और मूल्यों के प्रारंभिक पाठ परिवार से ही सीखता है।

माता-पिता का स्नेह बालक को भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करता है। परिवार में यदि सम्मानपूर्ण संवाद और लोकतांत्रिक वातावरण हो तो बालक में आत्मविश्वास और स्वतंत्र चिंतन विकसित होता है।

अत्यधिक कठोर अनुशासन, निरंतर आलोचना अथवा अन्य बच्चों से तुलना बालक के आत्मसम्मान को प्रभावित कर सकती है। दूसरी ओर अत्यधिक लाड़-प्यार भी आत्मनिर्भरता के विकास में बाधा बन सकता है। इसलिए स्नेह और उचित अनुशासन के बीच संतुलन आवश्यक है।

अभिभावकों को बालक की रुचियों एवं क्षमताओं को समझना चाहिए। केवल अंक और परीक्षा परिणाम के आधार पर बालक का मूल्यांकन करना उचित नहीं है।

विद्यालय और परिवार के बीच नियमित संपर्क भी आवश्यक है। शिक्षक और अभिभावक यदि बालक के व्यवहार, रुचि, कठिनाइयों एवं प्रगति पर संवाद करें तो व्यक्तित्व विकास अधिक प्रभावी रूप से हो सकता है।

11. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और व्यक्तित्व विकास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समग्र विकास को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। नीति में शिक्षा को केवल परीक्षा और विषय ज्ञान पर आधारित प्रक्रिया के रूप में न देखकर विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक क्षमताओं के विकास से जोड़ा गया है।

नीति में आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता, समस्या समाधान, संवाद, सहयोग, अनुभवात्मक अधिगम, कला एवं खेल आधारित शिक्षा को महत्व दिया गया है। यह दृष्टिकोण व्यक्तित्व विकास से सीधा संबंध रखता है।

बहुविषयक शिक्षा बालक को अपनी रुचियों के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों को समझने का अवसर देती है। इसी प्रकार मातृभाषा, स्थानीय संस्कृति, भारतीय ज्ञान परंपरा और संवैधानिक मूल्यों पर बल बालक में सामाजिक एवं सांस्कृतिक आत्मबोध विकसित करने में सहायक हो सकता है।

12. आधुनिक समय में व्यक्तित्व विकास की चुनौतियाँ

वर्तमान समय में बाल व्यक्तित्व विकास के सामने कई नई चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं।

अत्यधिक स्क्रीन समय के कारण कई बालकों की प्रत्यक्ष सामाजिक सहभागिता कम हो सकती है। सामाजिक माध्यमों पर दूसरों से तुलना आत्मसम्मान और मानसिक संतुलन को प्रभावित कर सकती है।

परीक्षा और अंक आधारित प्रतिस्पर्धा विद्यार्थियों में तनाव उत्पन्न करती है। कई बार परिवार एवं विद्यालय की अपेक्षाएँ बालक की वास्तविक क्षमता से अधिक हो जाती हैं।

एकल परिवार और व्यस्त जीवनशैली के कारण माता-पिता एवं बच्चों के बीच संवाद में कमी भी देखी जाती है।

इन परिस्थितियों में विद्यालय को भावनात्मक शिक्षा, जीवन-कौशल, परामर्श तथा स्वस्थ डिजिटल व्यवहार पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

13. सुझाव

बालकों के संतुलित व्यक्तित्व विकास के लिए निम्न सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं—

1. शिक्षा को केवल परीक्षा और अंक-केंद्रित न रखकर बालक के समग्र विकास से जोड़ा जाए।
2. विद्यालयों में जीवन-कौशल एवं मूल्य आधारित शिक्षा को पर्याप्त स्थान दिया जाए।
3. खेलकूद, संगीत, कला, नाटक एवं अन्य सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में प्रत्येक बालक को भाग लेने का अवसर दिया जाए।
4. शिक्षक प्रशिक्षण में बाल मनोविज्ञान, भावनात्मक विकास तथा परामर्श कौशल को महत्व दिया जाए।
5. विद्यार्थियों की सार्वजनिक रूप से तुलना और अपमान की प्रवृत्ति से बचा जाए।
6. बालकों को स्वतंत्र रूप से प्रश्न पूछने और अपने विचार व्यक्त करने का अवसर दिया जाए।
7. विद्यालयों में भयमुक्त और लोकतांत्रिक वातावरण विकसित किया जाए।
8. विद्यार्थियों को नेतृत्व और जिम्मेदारी के अवसर दिए जाएँ।
9. अभिभावकों और शिक्षकों के बीच नियमित संवाद स्थापित किया जाए।
10. बच्चों के स्क्रीन समय एवं डिजिटल व्यवहार के प्रति संतुलित दृष्टिकोण अपनाया जाए।
11. प्रत्येक बालक की व्यक्तिगत रुचि, योग्यता एवं क्षमता को पहचानने का प्रयास किया जाए।
12. विद्यालयों में आवश्यकतानुसार मनोवैज्ञानिक परामर्श की सुविधा उपलब्ध कराई जाए।
13. योग, ध्यान, शारीरिक व्यायाम और खेलों को नियमित दिनचर्या का भाग बनाया जाए।
14. शिक्षा के माध्यम से सहिष्णुता, समानता, सहयोग, संवैधानिक मूल्यों तथा पर्यावरणीय जिम्मेदारी का विकास किया जाए।

15. बच्चों को केवल सफलता प्राप्त करना ही नहीं, बल्कि असफलता से सीखना भी सिखाया जाए।

14. निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बालकों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षा की भूमिका अत्यंत व्यापक और महत्वपूर्ण है। बालक का व्यक्तित्व किसी एक कारक से निर्मित नहीं होता, बल्कि परिवार, विद्यालय, शिक्षक, सहपाठी, सामाजिक वातावरण तथा व्यक्तिगत अनुभवों के संयुक्त प्रभाव से विकसित होता है। इन सभी कारकों को सकारात्मक दिशा देने का सबसे सशक्त माध्यम शिक्षा है।

शिक्षा बालक को केवल ज्ञान प्रदान नहीं करती, बल्कि सोचने, समझने, तर्क करने, निर्णय लेने और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता भी विकसित करती है। साथ ही यह उसके सामाजिक व्यवहार, भावनात्मक संतुलन, नैतिक मूल्यों और आत्मविश्वास को प्रभावित करती है। इसी कारण शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना होना चाहिए।

शिक्षक इस प्रक्रिया का केंद्रीय आधार है। शिक्षक के सकारात्मक व्यवहार, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन से एक साधारण बालक भी अपनी क्षमताओं को पहचान सकता है। दूसरी ओर विद्यालय का वातावरण बालक को सहयोग, अनुशासन, नेतृत्व और लोकतांत्रिक व्यवहार का व्यावहारिक अनुभव प्रदान करता है।

सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ बालक के उन गुणों को सामने लाती हैं जिन्हें केवल पुस्तकीय शिक्षा से विकसित नहीं किया जा सकता। खेल, कला, संगीत, नाटक, वाद-विवाद और सामाजिक सेवा जैसी गतिविधियाँ आत्मविश्वास, नेतृत्व, रचनात्मकता और टीम भावना का विकास करती हैं। परिवार भी व्यक्तित्व निर्माण का मूल आधार है। विद्यालय एवं परिवार के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित होने पर बालक का विकास अधिक संतुलित होता है। माता-पिता को भी यह समझना आवश्यक है कि प्रत्येक बालक की क्षमता और रुचि अलग होती है तथा केवल परीक्षा परिणाम उसके व्यक्तित्व और प्रतिभा का पूर्ण मापदंड नहीं हो सकता।

आज के बदलते सामाजिक और तकनीकी वातावरण में शिक्षा के सामने नई चुनौतियाँ हैं। इसलिए शिक्षा व्यवस्था को ऐसी दिशा में आगे बढ़ना होगा जिसमें ज्ञान के साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता, जीवन-कौशल, नैतिकता, सृजनात्मकता, सामाजिक संवेदनशीलता एवं आत्मनिर्भरता को समान महत्व दिया जाए।

अंततः कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व विकास शिक्षा का अतिरिक्त उद्देश्य नहीं, बल्कि शिक्षा का मूल उद्देश्य है। यदि विद्यालय, शिक्षक, परिवार एवं समाज समन्वित रूप से बालकों को सुरक्षित, प्रेरक और सृजनात्मक वातावरण उपलब्ध कराएँ, तो ऐसे नागरिकों का निर्माण संभव है जो न केवल व्यक्तिगत जीवन में सफल हों, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास में भी सकारात्मक एवं जिम्मेदार योगदान दे सकें।

संदर्भ सूची

1. भारत सरकार। (2020)। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
2. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (2005)। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*। नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी.
3. मंगल, एस. के.। *शिक्षा मनोविज्ञान*। नई दिल्ली: पी.एच.आई. लर्निंग।
4. मंगल, एस. के.। *बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र*। नई दिल्ली: पी.एच.आई. लर्निंग।
5. माथुर, एस. एस.। *शिक्षा मनोविज्ञान*। आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
6. शर्मा, आर. ए.। *शिक्षा मनोविज्ञान एवं बाल विकास*। मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
7. पाठक, पी. डी.। *शिक्षा मनोविज्ञान*। आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
8. सक्सेना, एन. आर. स्वरूप एवं मिश्रा, बी. के.। *शिक्षा मनोविज्ञान*। मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।

9. सिंह, अरुण कुमार। *उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
10. वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी. एन.। *बाल मनोविज्ञान एवं बाल विकास* आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
11. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। *बाल-केंद्रित शिक्षा एवं अधिगम संबंधी अध्ययन सामग्री* नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी.
12. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। *समग्र शिक्षा: विद्यालयी शिक्षा के लिए एकीकृत योजना* नई दिल्ली: भारत सरकार।
13. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग। *मूल्य आधारित शिक्षा एवं व्यक्तित्व विकास संबंधी दिशा-निर्देश* नई दिल्ली: विश्वविद्यालय अनुदान आयोग।
14. विश्व स्वास्थ्य संगठन। *किशोर एवं बाल मानसिक स्वास्थ्य तथा जीवन-कौशल संबंधी शैक्षिक सामग्री* जिनेवा: विश्व स्वास्थ्य संगठन।
15. संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन। *समग्र शिक्षा, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम एवं सतत विकास के लिए शिक्षा संबंधी प्रकाशन* पेरिस: यूनेस्को।
16. राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग। *विद्यालयी बच्चों के संरक्षण एवं सकारात्मक विकास संबंधी दिशानिर्देश* नई दिल्ली: भारत सरकार।
17. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद। *शिक्षक शिक्षा एवं बाल-केंद्रित शिक्षण संबंधी दस्तावेज* नई दिल्ली: एन.सी.टी.ई.
18. अग्रवाल, जे. सी.। *शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार* नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
19. चौहान, एस. एस.। *उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान* नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
20. लाल, रमन बिहारी एवं जोशी, एच. एन.। *शिक्षा मनोविज्ञान और बाल विकास* मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।

Cite the Article:

सीमा, डॉ. . (2026). बालकों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षा की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 4(1) 16-24, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 04, Issue 01, September-2026. DOI: - <https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.02>

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.